जेलियांगरोंग हेराका संघ के स्वर्ण जयंती समारोह सह 42वें सम्मेलन में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का अभिभाषण

दिनांक : 6 फरवरी 2024, मंगलवार	समय : 12.30 AM	स्थान : लोदीराम गांव, हाफलोंग

- उत्तर कछार पर्वतीय स्वशाषी परिषद (NCHAC) के मुख्य कार्यकारी सदस्य (CEM) श्री देबोलाल गारलोसा जी,
- जेलियांगरोंग हेराका एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री केहुमबुई जेलियांग जी,
- महासचिव श्री मुंगतुइंग जान्मे जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- संगठन के सम्मानित अधिकारी एवं सदस्यगण,
- मीडिया के हमारे मित्रों,
- देवियो और सज्जनों,

नमस्कार !

सर्वप्रथम मैं आप सभी को जेलियांगरोंग हेराका संघ की स्वर्ण जयंती की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं। इस शुभ अवसर पर मैं स्वतंत्रता सेनानी हाइ पाउ जादोनांग और रानी मां गईदिनल्यू को भावभीनी श्रद्धांजलि देता हूं तथा संगठन के विकास में अपना योगदान देने वाले सभी महानुभावों को नमन करता हूं।

संगठन के स्वर्ण जयंती समारोह सह 42वें सम्मेलन में आप सभी के बीच उपस्थित होकर मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। वास्तव में यह संगठन के 50 वर्षों के गौरवशाली इतिहास का जानने तथा इसके संस्थापकों और सदस्यों के परिश्रम और समर्पण भावना का सम्मान करने का सुअवसर है।

5 जनवरी 1974 को स्थापित जेलियांरोंग हेराका संघ एक धार्मिक और सामाजिक संगठन है। रानी मां गईदिनल्यू ने हेराका धर्म को सबल प्रदान करने तथा इसकी संस्कृति के संरक्षण और विकास के लिए इस संगठन की स्थापना की थी। इसके अंतर्गत "जेलियांगरोंग हेराका महिला समिति" और "जेलियांगरोंग हेराका यूथ ओर्गेनाइजेशन" भी है, जो समुदाय की महिलाओं और युवाओं को संगठित करने तथा समाज के विकास के उन्हें प्रोत्साहित करते हैं।

देवियो और सज्जनो,

भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान जब देश में धर्मांतरण के लक्ष्य के साथ कृश्चियन मिशनरियों का प्रभाव बढ़ रहा था, उस समय हेराका धर्म का आस्तित्व भी खतरे में था।

तब अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए हाइपाउ जादोनांग के नेतृत्व में जेलियांगरोंग समुदाय के लोगों ने ब्रिटिश हुकुमत के खिलाफ आंदोलन छेड़ रखा था, जिसे हेराका आंदोलन के नाम से जाना जाता था। लेकिन 1931 में अंग्रेजों ने आंदोलन को दबाने के लिए जादोनांग को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें फांसी दे दी।

जादोनांग के शहीद होने के बाद भी हेराका आंदोलन की आग ठंडी नहीं हुई, बल्कि और भड़क उठी। इस बार आंदोलन की बागडोर रानी मां गइदिन्ल्यू ने संभाल रखी थी। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद मां रानी गईदिनल्यू ने अपने देश और समाज के प्रति समर्पण भावना एवं कुशल नेतृत्व से अंग्रेजों को कड़ी टक्कर देती रही।

रानी मां देश की आजादी के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के प्रयासों और उनके आदर्शों से काफी प्रेरित थी। रानी मां ने इस धार्मिक-सामाजिक आंदोलन को राष्ट्रीय आंदोलन का रूप देते हुए स्वतंत्रता संग्राम के साथ जोड़ लिया। उन्होंने जेलियांगरोंग समुदाय के लोगों देश की आजादी के लिए प्रोत्साहित करती रहीं।

1932 को अंग्रेजों ने रानी मां को गिरफ्तार कर लिया और आजीवन कारावास के लिए तुरा जेल में डाल दिया। लेकिन 1947 में जब देश आजाद हुआ तब वे भी जेल से रिहा हो गईं। आजादी की लड़ाई में रानी मां के योगदान और बलिदान को देश कभी भुला नहीं सकता।

देश की आजादी के बाद भी रानी मां ने जेलियांगरोंग समुदाय के विकास और हेराका धर्म के संरक्षण के लिए कार्य करती रहीं। मैं इस महान स्वतंत्रता सेनानी को शत्-शत् नमन करता हूं।

मुझे खुशी है कि रानी मां के आदर्शों के अनुरूप जेलियांगरोंग हेराका संघ अपनी धर्म और संस्कृतिक की उन्नति के लिए समर्पण के साथ काम कर रहा है। यह संगठन के सदस्यों के परिश्रम का ही प्रतिफल है कि हरेका धर्म और जेलियांगरोंग समुदाय का आस्तित्व न सिर्फ बरकरार है, बल्कि देश में अन्य जातीय धर्म और संस्कृति की तरह इसकी भी अलग पहचान है।

देवियों और सज्जनों,

धर्म और संस्कृति समाज की सूक्ष्म संस्कार होते हैं, जो अतीत और भविष्य के बीच सेतु का कार्य करती है। धर्म वह शक्ति है, जो मानव जाति को एकता के सूत्र में बांधती है। भारतीय संस्कृति केवल अपने लिए नहीं, बल्कि सभी के कल्याण की सोच रखकर जीवन जीने की प्रेरणा देती है। जेलियांगरोंग समुदाय की हेराका धर्म भी भारत की विविध धर्म और संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसके संरक्षण और विकास समाज के हर लोगों का कर्तव्य है।

महाभारत मे भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश देते वक्त कहा था- **धर्मो रक्षति रक्षितः।**

जिसका अर्थ है " जो धर्म की रक्षा करता है, उसकी रक्षा स्वयं धर्म करता है।

यहि धर्म का नाश किया जाए तो वह नष्ट हुआ धर्म ही कर्ता को भी नष्ट कर देता है और यदि उसकी रक्षा की जाए तो वही कर्ता का भी रक्षा करता है। इसलिए हमें अपने धर्म का त्याग नहीं करना चाहिए।

हमें अपने धर्म, संस्कृति और परंपरा की रक्षा के लिए अपनी सभ्यता और संस्कार को बढ़ावा देना होगा। मैं समझता हूं इसमें युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। हमें युवाओं को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की वास्तविकता, महानता, गौरव का ज्ञान करना होगा। उन्हें भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धांतों, आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा के परिचित कराना होगा।

वर्तमान में आज की युवा पीढ़ी के लिए यह आवश्यक है वे अपने मूल धर्म और संस्कृति से परिचित हों और नैतिक गुणों से भरपुर होकर सच्चे भारतीय होने के गौरव को बनाए रखें।

मैं जेलियांगरोंग समुदाय के युवाओं से अपील करता हूं कि आप अपनी संस्कृति को याद रखें और नैतिक मूल्यों पर ध्यान दें। आप एक ऐसा भारत बनाने में योगदान दें, जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी हों और जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनंत तक हो।

देवियो और सज्जनो,

स्वामी विवेकानंद जी का मानना था कि धर्म वह नैतिक बल है, जो व्यक्ति तथा राष्ट्र को शक्ति प्रदान करता है। वे धर्म को व्यक्ति व समाज दोनों के लिए उपयोगी मानते थे। उनका यह भी मानना था कि अपनी संस्कृति के उत्थान के लिए एवं बौद्धिक कौशल सीखने और मूल्य आधारित शिक्षा पर जोर देना आवश्यक है।

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' वास्तव में स्वामी जी के दर्शन को उन्मुख करती है, जिसका लक्ष्य मूल्य आधारित शिक्षा है। यह मूल्य आधारित शिक्षा के साथ भारत की समृद्ध संस्कृति और इतिहास के बारे में जागरूक करने पर जोर देगा।

इस शिक्षा नीति में भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के महत्व को स्वीकार करते हुए इस पर शोध की आवश्यकता बताई गई है, जिससे हमारे देश की समृद्ध विरासत का लाभ आने वाली पीढ़ियों को मिल सके। देश के युवाओं को अपनी अद्‌वितीय कला, भाषा और परम्पराओं के बारे में ज्ञानवान बनाना राष्ट्रीय गौरव एवं आत्मविश्वास की दृष्टि से अति आवश्यक है।

मैं समझता हूं कि हेराका धर्म और संस्कृति को बढ़ावा देने के कार्य में जेलियांगरोंग समुदाय के लोगों को युवाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। इसलिए हमारे लिए यह आवश्यक है कि हमें एक ऐसा वातावरण बनाने की जरूरत है, जिसमें हमारे युवाओं को नई खोजों, नए आविष्कारों के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

इस कार्य में जेलियांगरोंग हेराका संघ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। संगठन में युवाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए और उन्हें अपने धर्म और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि संगठन की स्वर्ण जयंती समारोह के साथ आयोजित यह 42वां सम्मेलन युवाओं को अपने धर्म, कला, संस्कृति को बढ़ावा देने और समुदाय के विकास के लिए प्रेरित करेगा। मैं सम्मेलन की सफलता और संगठन के भावी कार्यक्रमों के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

पुनः आप सभी को जेलियांगरोंग हेराका संघ की स्वर्ण जयंती की बहुत-बहुत बधाई।

धन्यवाद।

जय हिन्द।